कक्षा- अष्टम विषय-संस्कृतम्

पाठ्यपुस्तक- रुचिरा (तृतीय भाग:)

पाठ: - दशम: (नीतिनवनीतम्)

मक्खनसमान नीतिवचन

प्रस्तुतकर्ता

नाम- बी. एल. मीना

स्नातक प्रशिक्षित शिक्षक

प० ऊ० के वि० - 4

रावतभाटा

दशमः पाठः

नीतिनवनीतम् (पाठ सारांश)

प्रस्तुत पाठ मनुस्मृति के कतिपय श्लोकों का संकलन है जो सदाचार की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है | यहाँ माता- पिता तथा गुरुजनों काआदर और सेवा से प्रसन्न करने वाले अभिवादनशील मनुष्य को मिलने वाले लाभ की चर्चा की गई है | इसके अलावा सुख- दुख मे समान रहना, अंतरात्मा को आनन्दित करने वाले कार्य करना करना तथा

इसके विपरीत कार्यों को त्यागना, संम्यक् विचारोंपरांत तथा सत्यमार्ग का अनुसरण करते हु एकार्य करना आदि शिष्टाचारों का उल्लेख भी किया गया है |

पाठः दशमः नीतिनवनीतम् (शब्दार्थ)

अभिवादनशीलस्य - प्रणाम करने के स्वभाव वाले के |

वृद्धोपसेविनः - बडों की सेवा करने वाले के |

क्लेशम् - कष्ट | निष्क्रियः - निस्तार |

कुर्वतः - करते हु एका | परितोषः - संतोष |

अंतरात्मनः - हृदय की | कुर्वीत - करना चाहिए |

न्यसेत् - रखना चाहिए | पूतम् - पवित्र |

नृणाम् - मनुष्यों का | वर्षशतैः - सौ वर्षों में |

समाप्यते - समाप्त होता है | समासेन - संक्षेप में |

विद्यात् - जाना चाहिए | सत्यपूताम् - सच |

दशम: पाठ:

नीतिनवनीतम् (हिंदी अर्थ) मक्खनसमान नीतिवचन

क- प्रणाम करने वाले तथा नित्य वृद्ध लोगों की सेवा करने वाले (व्यक्ति) की आयु , विद्या, यश, तथा बल - ये चार चीजें बढती है |

ख- मनुष्य के जन्म के अवसर पर माता -पिता जिस कष्ट को सहन करते हैं, उसका बदला सैंकड़ों वर्षों में भी नही चुकाया जा सकता |

ग- उन दोनों का (अर्थात - माता- पिता का) तथा गुरु का सदा और नित्य ही प्रिय करना चाहिए | उन तीनों के प्रसन्न हो जाने पर सभी तप संपन्न हो जाते हैं |

घ- दूसरे के वश में होना ही दु:ख है तथा अपने वश में होना ही सुख है | यह सुख - दु:ख की परिभाषा संक्षेप में जानना चाहिए |

ड•- जिस कार्य को करते हु एअंतरात्मा को संतोष होता है, उसे प्रयत्न पूर्वक करना चाहिए, इसके विपरीत का त्याग करना चाहिए |

च- दृष्टि के द्वारा पवित्र कदम को रखे, कपड़े से छानकर पवित्र जल पीना चाहिए , सत्य से पवित्र वाणी को कहना चाहिए | मन से पवित्र आचरण करना चाहिए |

दशम: पाठ: नीतिनवनीतम् (पाठांत प्रश्नों के उत्तर)

प्रश्न- 1- अधोलिखितानि प्रश्नानाम् उत्तराणि एकपदेन लिखित -

क- मातापितरौ ख- वस्त्रपूतम्

ग- मनुस्मृते: घ- सत्यपूताम्

ङ - Out of Lession

च- परवशम्

छ- सुखम्

ज-

प्रश्न- 2- प्रश्नानाम् उत्तराणि पूर्णवाक्येन लिखित -

क- परवशं दु:खम्बा, आत्मविश्वास सुखम् |

ख- मातापितरौ: यं क्लेशं सहेते, तस्य निष्कृति: कर्त्तुम् न शक्या |

ग- माता ,पिता ,आचार्य: एते त्रय: सन्ति |

घ-

दशम: पाठ: नीतिनवनीतम् (पाठांत प्रश्नों के उत्तर)

ड॰ - अभिवादनशीलस्य आयुर्विद्यायशोबलम् वर्धन्ते |

च- सर्वदा मातापित्रो: गुरोश्च प्रियं कुर्यात् |

प्रश्न--3- स्थूलपदान्यवलम्बय प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

क- कस्य ख - किम्

ग- किम् घ- कौ

ड॰ - किं

प्रश्न- 4- वाक्यप्रयोगं कुरुत-

क- विद्या ददाति विनयम |

ख- पित्रो: सेवा एव तप: अस्ति |

ग- सर्वथा प्रियं समाचरेत् |

घ- परितोष: मनुष्यस्य धनम् अस्ति |

ड॰- नित्यं सत्यं वदेत् |

दशम: पाठ: नीतिनवनीतम् (पाठांत प्रश्नों के उत्तर)

प्रश्न- 5- आम् च न लिखत-

क- न ख- आम् ग- न

घ- आम् ड• - आम् च- आम्

प्रश्न- 6- समुचितपदेन रिक्तस्थानानि पूरयत-

क- वर्षशतैरपि ख- चत्वारि

ग - तप: घ- समासेन

ड•- पादम् च- प्रियम्

प्रश्न- 7- उचिताव्ययेन वाक्यपूर्ति कुरुत-

क- नित्यं ख- यादृशम् ग- अपि

घ- एव ड•- यथा च- तावत्

धन्यवाद